

समावे आप में शंकर, तभी सुख रूप होता है ।  
अरे नर ध्यान धर घट में, व्यर्थ क्यूं जनम खोता है ॥  
अरे नर ध्यान धर घट में, व्यर्थ क्यूं जनम खोता है ।  
विषय के झूल झूले में , क्यों दुःख के बीज बोता है ॥ टेर ॥  
गया तू भूल चेतनता, प्रपंची बन गया जग में ।  
न जाने देह को नश्वर, सदा सुख नींद सोता है ॥ १ ॥  
सदा सत्संग कर प्यारे, दमन कर पंच विषयो का ।  
सजग हो आत्म चिंतन में, समय सम्पूर्ण होता है ॥ २ ॥  
शरण गुरुदेव की रहकर, श्रवण कर सत्य शिक्षा को ।  
बने आत्म तभी निर्मल, अभय पद प्राप्त होता है ॥ ३ ॥  
अविध्या भाव तब नाशे, लखे चहूँ और अमृत को ।  
समावे आप में शंकर, तभी सुख रूप होता है ॥ ४ ॥  
जय श्री नाथ जी की